SEMESTER - 3

CC- 11

South Asia 1950 Onwards

- **Unit -4 : Globalization and its impact on women and society**

  Part-3

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्र कुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रा नंदन

अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग

पटना विश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

भारत में युवाओं पर वैश्वीकरण का प्रभाव :

वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप स्पष्ट रूप से आर्थिक अवसरों और लाभों में वृद्धि होती है। किन्तु इसकी कुछ महत्वपूर्ण सामाजिक लागतें भी होती है। यर लागतें वैश्विक सन्दर्भ में अनिश्चित और तीव्र रूप से विकसित होते युवाओं की कमजोर संक्रमणशील स्थिति को देखते हुए उन्हें आसमान रूप से प्रभावित करती हैं। भारत में अधिकांश जनसंख्या युवा है। भारत में युवाओं की जनसंख्या वृद्धि,इसके द्वारा वैश्वीकरण की प्रतिक्रिया के मार्ग में महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। भारतीय युवा वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों धारणाओं को बढ़ावा दे रहे हैं। वे वैश्वीकरण को इस प्रकार से अंगीकार कर रहे हैं,जिसकी पूर्ववर्ती पीढ़ी ने कभी कल्पना भी नहीं की थी।

आर्थिक वैश्वीकरण नगरीय निर्धनता में वृद्धि का कारन बना है क्यूंकि लोग अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवास करते हैं। नगरीय प्रवासियों का एक बड़ा भाग युवाओं का है। युवा शहरों में अवसरों की खोज के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों के परम्परागत पारिवारिक मानदंडों और प्रथाओं के बंधनों से मुक्त होकर उत्साह और स्वतंतता का अनुभव कर रहे हैं। किन्तु युवा नगरों में बेरोजगारी के उच्च स्तर का सामना करते हैं। युवा प्रवासियों का शहरों की ओर आकर्षण एवं प्रतिकर्षण तनावग्रस्त स्थानीय अर्थव्यवस्था की स्थिति द्वारा निर्धारित होता है। महत्वपूर्ण अवसंरचना की अनुपस्थिति में अनेक युवा अल्प संसाधनों के कुप्रबंधन एवं भ्रष्टाचार तथा कभी कभी प्राकृतिक आपदाओं से पीड़ित है। धार्मिक,नागरिक तथा नृजातीय संघर्ष भी शहरों में विद्यमान समृद्धि को क्षति पहुंचाते हैं।

एक अत्यंत छोटे गाँव से अत्यधिक बड़े शहरों के भारतीय युवाओं की प्राथमिक महत्वाकांक्षा "आमिर बनना" है। युवा वर्ग उद्यम और शिक्षा के माध्यम से इस लक्ष्य को प्राप्त करने की उम्मीद करते हैं। सिविल सेवा,इंजीनीयरिंग तथा चिकित्सा जैसे सम्मानित करियर उच्च तकनीक और मीडिया में उच्च वेतन की नौकरियों हेतु मार्ग प्रदान कर रहे हैं। वर्त्तमान में

युवा अपनी अधिक भौतिकवादी महत्वाकांक्षाओं और अधिक वैश्विक रूप से अवगत तर्कों के साथ सख्त तरीकों तथा प्रतिबंधित भारतीय बाजार को धीरे-धीरे त्याग रहे हैं। युवा एक अधिक कॉस्मोपॉलिटन समाज की मांग कर रहे हैं जो वैश्विक अर्तव्यवस्था का पूर्ण विकसित भाग है।

भारत को प्रभावित करने वाले गतिशील,वैश्विक आर्थिक बालों के अतिरिक्त वैश्वीकरण ने भारत की समृद्ध संस्कृति में परिवर्तन किया है। युवा स्वयं को वैश्विक किशोरों के रूप में देखते हैं। उन्होंने जिस समुदाय में जन्म लिया था उसके स्थान पर वे अधिक बड़े समुदाय से सम्बन्ध रखते हैं। युवा पीढ़ी पश्चमी लोकप्रिय समुदाय को स्वीकार कर रही है तथा इसे अपनी भारतीय पहचान में समाविष्ट कर रही है। पश्चिम और भारतीय मूल्यों का एक जटिल तथा शक्तिशाली समिश्रण हो रहा है,जो विशेषतया भारतीय युवाओं के मध्य स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। उपभोक्तावाद,भारतीय लोगों की परंपरागत मान्यताओं और प्रथाओं में समाविष्ट हो गया है तथा इसने उसमे परिवर्तन भी किया है। पश्चिम के नए फैशन के प्रभाव में विशेषकर नगरीय युवाओं के मध्य परम्परागत भारतीय युवाओं के परिधानों में गिरावट आई है। नवीनतम कारे,टेलीविज़न,इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा प्रचलित वस्त्रों की खरीद अत्यंत लोकप्रिय हो गई है। निर्धन युवा जनसंख्या विज्ञापनों में प्रदर्शित महंगे उत्पादों के प्रलोभन हेतु विशेष रूप से अति संवेदनशील है और जब वे इन विज्ञापनों के अनुरूप अपनी इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं तो कुंठाग्रस्त हो जाते हैं। उनकी इस निराशा का परिणाम अपराध में संलिप्त होना हो सकता है।

वैश्वीकरण पारिवारिक संस्थाओं में भी परिवर्तन कर रहा है तथा एकाकी परिवार तीव्रता से मानक बनते जा रहे हैं। वर्त्तमान में युवा पूर्ववर्ती पीढ़ी के अनुरूप अपने दादा दादी के करीब नहीं है तथा वे बड़े बुजुर्गों के साथ बहुत काम समय व्यतीत करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित ज्ञान में कमी आ रही है। वैश्वीकरण ने युवाओं के मध्य अनिश्चितता में वृद्धि भी की है। यह अन्तर्निहित अस्थिरता तनाव और नियंत्रण

के आभाव में वृद्धि का कार्य कर सकती है जिसका युवावर्ग द्वारा प्रतिदिन अनुभव किया जाता है। अनिश्चितता परंपरागत मानदंडों के भंग होने,परिवार और विवाह जैसे सामाजिक संबंधों के कमजोर होने तथा बाजार अर्थव्यवस्था के कारण करियर में अनिश्चितता के कारण व्याप्त है। अधिकांश धार्मिक क्रियाकलाप युवाओं हेतु अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। वे धर्म में परिवर्तन देखना चाह रहे हैं। वे पारम्परिक विचारों का आत्मसातीकरण नहीं कर रहे हैं बल्कि उन्हें केवल सहन कर रहे हैं। यद्दपि वे धर्म के साथ कुछ अप्रत्यक्ष मूल्यों की खोज भी करते हैं।

वैश्वीकरण के प्रभावों का मूल्यांकन अच्छे और बुरे दोनों एक मिश्रण है। आर्थिक वैश्वीकरण ने शिक्षा और नौकरियों के अवसरों में सुधार किया है तथा अत्यधिक रोजगार अवसरों को प्रदान किया है। लेकिन इसने निर्धन को और निर्धन बना दिया है। किन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि वैश्वीकरण की उपेक्षा नहीं की जा सकती है। युवा वर्ग आधुनिक,प्रगतिशील तथा इसके एक भाग बनाने के अवसर का लाभ उठा रहे हैं।

* परिवार पर वैश्वीकरण का प्रभाव :

परम्परागत रूप से भारतीय समाज की मूल इकाई व्यक्ति नहीं बल्कि संयुक्त परिवार रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारतीय सामाजिक जीवन का प्रत्येक पहलू व्यापक परिवर्तन के दौर से गुजरा है और यह सिलसिला निरंतर जारी है। वैश्वीकरण के कारण पारिवारिक संस्था का महत्व तीव्र गति से काम होता जा रहा है एवं व्यक्तिवाद तीव्रता से बढ़ रहा है।

-परिवार की संरचना:

~ नए रोजगार और शैक्षिक अवसरों की तलाश में युवा पीढ़ी की बढ़ती गतिशीलता ने पारिवारिक संबंधों को कमजोर बना दिया है। पारिवारिक बंधन और सम्बन्ध भौतिक दुरी के

कारण शिथिल हो गए हैं क्योकि पहले की भांति परिवार के सदस्यों का साथ रहना अव्यवहारिक हो गया है।

~ परिवार के नए स्वरुप उभर रहे हैं : उदाहरण के लिए एकल अभिभावक परिवार,लाइव इन रिलेशनशिप,महिला मुख्या वाले परिवार ,ड्यूल करियर वाले परिवार इत्यादि।

-परिवार के प्रकार्य :

~ भौतिक दुरी के कारण पारिवारिक बंधन और सम्बन्ध कमजोर हो रहे हैं क्योकि यह परिवार के सदस्यों के लिए पहले की तुलना में एक साथ आने को अव्यवहारिक बनता है। इसने बच्चों,बीमार व्यक्तियों और बुजुर्गों के लिए देखभाल एवं पोषण की इकाई के रूप में परिवार के प्रारंभिक आदर्श को प्रभावित किया।

~ कार्यबल में महिलाओं के शामिल होने के कारण परिवार में बुजुर्ग लोगों की देखभाल में कमी आई है।

-जीवनसाथी का चयन : युवा पीढ़ियां "Shaadi.com ,Bharat Matrimony " जैसी मॅट्रिमोनी साइटों पर निर्भर रहने लगी है। वर/ वधु के चयन में पारिवारिक भागीदारी कम हो रही है। हालाँकि माता पिता द्वारा तय किये गए विवाह (अरेंज्ड मैरिज)की परम्परा अभी भी भारतीय समाज में प्रासंगिक है।

~ पारम्परिक रूप से परिवार से परिवार युवा पीढ़ी को शिक्षा प्रदान करने की भूमिका निभाता है। यद्दपि बढ़ते श्रम विभाजन और कार्य के विशिष्टता के कारण विशेषज्ञ संस्थाओं ने इस भूमिका का अधिग्रहण कर लिया है।

~ हालाँकि परिवार के कार्यों में परिवर्तन के बावजूद आज भी कुछ कार्य परिवार हेतु विशिष्ट है यथा - बच्चों का प्राथमिक समाजीकरण ,सामाजिक नियंत्रण की एजेंसी।

- अंतर-व्यक्तिगत सम्बन्ध : वस्तुतः परम्परिक अधिकारिता सम्बन्धी संरचना में बदलाव आया है। परिवार के मुखिया पिता /दादा,परिवार के आया अर्जक के समक्ष अपने अधिकार खोने लगे हैं।

~ एकल परिवारों में वैवाहिक नियमों और शक्तियों में बदलाव आया है।

~ पुरुषों के प्रति महिलाओं की अधीनता और बच्चों के प्रति पिता की सख्त अनुशासनात्मक भूमिका परिवर्तित हो रही है।

~ युवा पीढ़ी में व्यक्तिवाद बढ़ रहा है। उनमे से कई पारिवारिक हितों के लिए अपने व्यक्तिगत हितों के बलिदान में विश्वास नहीं करते हैं।

~ यद्दपि प्रद्योगिकी की पहुंच के कारण दूरस्थ रिश्तेदारों के साथ संपर्कों में सुधार हुआ है।